The Academia
(A Multidisciplinary Peer-Reviewed Research Journal)
Volume: 03, Issue: I, Pages: 50-53, Year: 2025
ISSN- 2583-8830

बज्रभाषा जीवनीपरक साहित्य में देशकाल का वातावरण

राजीव यादव [1]

1. असिस्टेंट प्रोफेसर, कालीचरण पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ

Received: 11 May 2025 **Accepted: 25 June 2025** **Published: 28 June 2025**

शोध सारांश

ब्रजभाषा जीवनीपरक साहित्य में युग-जीवन की सूक्ष्म झाँकियाँ देखी जा सकती हैं और यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ब्रजभाषा जीवनीपरक काव्य में तदयुगीन जीवन, सभ्यता और संस्कृति के बड़े सजीव और गतिशील चित्र विद्यमान हैं। ब्रजभाषा जीवनीपरक काव्य का इस प्रकार का अनुशीलन, मध्यकालीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण है। अतः कहना न होगा कि इन चरित काव्यों में राजाओं की प्रशस्तियां होते हुए भी मध्यकालीन राजदरबारी जीवन, युद्धकला और राजनीतिक क्रियाक्लापों के दर्शन अपने पूरे आभिजात्य संस्कृति के साथ मौजूद हैं।

बीज शब्द - बज्रभाषा, जीवनीपरक साहित्य,सभ्यता और संस्कृति,सामंती संस्कृति,मध्यकाल, राजदरबारी जीवन, चरितकाव्य, रीतिकाल, मुग़ल काल,आदिकाल,सामाजिक, सांप्रदायिक, धार्मिक,जनता की चित्तवृत्ति

1. प्रस्तावना

"प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चितवृति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है... जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, सांप्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है।" (शुक्ल,2005) इस संदर्भ में जब हम हिन्दी साहित्य के इतिहास पर विचार करते हैं तब यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है। हिन्दी साहित्य के उद्भव और विकास के समय से ही हमारा देश छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्यों विभाजित था। इन राज्यों में आये दिन युद्ध हुआ करते थे आदिकाल से ही कवियों का दरबारी होना सम्मान की बात थी। इन राज्यों के आश्रित कवि , दरबारी कवि अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा में काव्य लिखा करते थे। इन काव्यों में राजा के पूर्वजों की वंशावली, जन्म, बाल चरित्र का वर्णन, राज्याभिषेक, शिकार- प्रियता, दानवीरता, दयावीरता, धर्मवीरता, युद्ध वीरता आदि का विस्तार से वर्णन किया जाता था। जीवनीपरक वीरकाव्य की यह परम्परा आदिकाल से होती हुई भक्तिकाल और रीतिकाल तक निरंतर प्रवाहित होती रही।बज्रभाषा जीवनीपरक साहित्य के अधिकांश चरित नायक ऐतिहासिक वीर थे, अतः उनसे संबंधित चरितकाव्य में देश-काल और वातावरण का प्रभाव स्पष्टतः दिखाई देता है। ब्रजभाषा के अधिकांश चरित काव्य संवत् 1700 से 1900 के मध्य के हैं जिनमें रीतिकालीन हिन्दी वीर काव्य युगीन वातावरण का लगभग प्रामाणिक इतिहास है। इन चरित काव्यों में " विक्रम संवत् 1700 से 1900 के मध्य में विद्यमान कवियों और उसके समकालीन वीर शासकों, राजाओं, नवाबों, राणा - महाराणाओं, रईसों आदि के प्रत्यक्ष संबंध पर आधृत हैं। ये रचनाएँ तात्कालिक देश व्यापी अशाति, संघर्ष और मुगल सल्तनत के पतन का इतिहास बतलाती है। इन रचनाओं में भारतीय शासकों के पारस्परिक युद्ध, फूट, तनातनी और मारकाट की कहानी गुम्फित है। इस तरह से ये रचनाएँ देशव्यापी सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक अवस्था पर प्रकाश डालती हैं, जिससे यह पता चलता है कि छोटे-छोटे राज्यों में जन-जीवन का वातावरण बहुत संकटापन्न और संघर्षपूर्ण था। राजसिंह, शिवाजी, छत्रसाल, सूरजमल, भगवन्तराय खीची आदि कुछ ही शासक ऐसे थे, जिनके संरक्षण में जनता आश्वस्त थी।'' (तिवारी,1987)

हम जानते हैं कि ब्रजभाषा जीवनीपरक साहित्यकारों का सम्बन्ध भारतीय इतिहास में मध्यकाल से है। यह काल सामंती संस्कृति के पतन का काल भी कहा जा सकता है। इस काल में कला, संस्कृति और धर्म के क्षेत्रों में जीवन के आन्तरिक मूल्यों की अपेक्षा बाह्याचारों और रूपगत मूल्यों की प्रतिष्ठा अधिक हो गई थी। पतनशील राजनीति जैसे अपने पैरों पर खड़ी नहीं रह पा रही थी। वह धर्म सापेक्ष होती जा रही थी। अकबर ने जिस धर्म निरपेक्ष राजनीतिक मार्ग को अपनाकर शासन किया वह औरंगजेब के समय में बिल्कुल बदल गई। शाहजहाँ स्वभावतः अपने पिता जहाँगीर की तरह कला-प्रिय और विलासी था, किन्तु वह धर्मान्ध नहीं था, इसलिए उसके शासनकाल में राजनीतिक वातावरण अधिक संयमित था। सन् 1658 में शाहजहाँ के चारों पुत्रों में उत्तराधिकार के लिए युद्ध हुआ। उसमें औरंगजेब अपने सम्बन्धियों और तीनों भाइयों की हत्या कर 21 जुलाई सन् 1658 ई० को दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। उसने अपने पिता शाहजहाँ को आगरे के किले में बन्दी बनाया, जहाँ 21 जनवरी 1666 ई० को उसका देहांत हो गया। भूषण अपने समय की राजनीतिक परिस्थितियों के प्रति सचेत थे और उन्होंने सामयिक राजनीतिक हलचलों को अपने काव्य का विषय बनाया है। औरंगजेब के उत्तराधिकार की घटना पर उन्होंने निर्भीक अभिव्यक्ति की है। अपने समय के

The Academia
(A Multidisciplinary Peer-Reviewed Research Journal)
Volume: 03, Issue: I, Pages: 50-53, Year: 2025
ISSN- 2583-8830

सर्वोच्च सत्ताधारी शासक पर उन्होंने जो टिप्पणी की है, वह उनके निर्भीक व्यक्तित्व और समसामयिक घटनाओं के प्रति जागरूकता का परिचय देती है। कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-

"किबले के ठौर बाप बादशाह साहजहाँ,
वाको कैद कियो मानो मक्के आगि लाई है।
बड़ो भाई दारा वाको पकरिकै मारि डारयो,
मेहरहू नाहि मा को जायो सगो भाई है॥
खाइकै क़सम त्यों मुराद को मनाइ लियो,
फेरि ताहू साथ अति कीन्हीं तै ठगाई है।
भूषन सुकवि कहै सुनो नवरंगजेब,
ऐसे ही अनीति करि पातसाही पाई है॥'' (मिश्र,2017)

औरंगजेब की अनीति के प्रति कवि चुप नहीं है भूषण के समय में औरंगजेब भारत का सम्राट था। भारत की केन्द्रीय सत्ता उसी के हाथ में थी।

औरंगजेब बड़ा आततायी, धर्मान्ध, और विध्वंसक प्रवृत्ति का कठोर शासक था। उसने अकबर के समय से चली आती हुई हिन्दुओं-सम्बन्धी शासकीय नीति में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया। हिन्दुओं की धार्मिक भावना पर आघात कर उसने उनसे 'जजिया' वसूल किया और अनेक मन्दिरों को गिराकर वहाँ मस्जिदें बनवाईं। औरंगजेब की इस अनुदार धार्मिक नीति ने हिन्दुओं को तो असंतुष्ट किया ही साथ में मुस्लिम जनता के एक बहुत बड़े भाग को भी असंतुष्ट किया। उसकी धार्मिक नीति या धर्मान्धता के कारण मुग़ल शासन अधःपतन के मार्ग की ओर अग्रसर होने लगा।

"औरंगजेब के अधीन जितने भी छोटे-छोटे राज्य थे, वे सब उससे आतंकित रहते थे। राजपूतों ने तो बाह्य रूप से हार स्वीकार कर ली थी चाहे आन्तरिक रूप से पराजय का क्षोभ उन्हें विद्रोह की आग में जला रहा हो, पर विवशता उस कुण्ठा को जटिल से जटिलतर बना रही थी। यदि क्रांति होती तो उनका मानसिक समर्थन अवश्य प्राप्त होता। ये अधीन राजा किसी प्रकार अपना अस्तित्व बनाये रखना चाहते थे। परिणामतः नजराने या भेंट देकर या 'चाकरी' करके वे सम्राट को प्रसन्न रखना चाहते थे। उदयपुर के महाराणा भी अपनी परम्परा को भूल गये थे। हाड़ा (कोटा-बूंदी के राजा), राठौर (जोधपुर के राजा), कछवाहे (जयपुर के महाराजा) और गौरवंशीय क्षत्रिय भी औरंगजेब की शरण में आ गये थे।'' (बोरा,1987) इस तत्कालीन युगीन वातावरण का चित्रण भूषण ने अपने काव्य में किया है-

"अटल रहे हैं दिगअंतन के भूप, धरि रैयत को रूप निज देस पेस करिकै।
राना रह्यो अटल बहाना धरि सुलह को, बाना धरि भूषन कहत गुन भरिकै
हाड़ा राठवर कछवाहे गौर और रहे, अटल चिकत्ता की चमाऊ धरि डरिकै।
अटल सिवाजी रह्यो दिल्ली को निदरि, धीर धरि एड़ धरि गढ़ धरि तेग धरिकै॥'' (मिश्र,2017)

सामाजिक रूप से यह युग घोर अव्यवस्था का युग था। समाज में उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के बीच एक बहुत बड़ी खाई बन गई थी। उच्च वर्ग अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए जनता पर अत्याचार करता था। प्रजा हित और जनकल्याण का भाव तत्कालीन शासकों में नहीं था। कुलीन वर्ग का भी नैतिक दृष्टि से पतन हो गया था। जदुनाथ सरकार ने भी इस सम्बन्ध में लिखा है-"मुगल अमीरों के नैतिक पतन का एक बहुत ही अर्थपूर्ण उदाहरण हमें वजीर के पौत्र तफख्खुर के चरित्व में मिलता है। अपने साथी गुण्डों को लेकर वह दिल्ली में अपने महल से निकलता और तब बाजार में दूकानों को लूटता तथा डोलियों में बैठकर नगर की आम सड़कों पर से निकलने वाली या यमुना नदी की ओर जाने वाली हिन्दू स्त्रियों को उड़ाकर उनके साथ व्यभिचार करता था; फिर भी न तो वहाँ कोई ऐसा

The Academia
(A Multidisciplinary Peer-Reviewed Research Journal)
Volume: 03, Issue: I, Pages: 50-53, Year: 2025
ISSN- 2583-8830

शक्तिशाली या साहसी न्यायाधीश ही था जो उसे दण्ड दे सकता और न ऐसे अत्याचारों को रोकने के लिए वहाँ पुलिस का कोई समुचित प्रबन्ध ही था।''(सरकार,1951)

भूषण ने भी इस प्रकार की अवस्था का चित्रण किया है :-

" बैठतीं दुकान लैकै रानी रजवारन की, तहाँ आइ बादसाह राह देखे सबकी।

बेटिन को यार और यार है लुगाइन को, राहन के मार दावादार गए दबकी ॥

ऐसी कीन्ही बात तोऊ कोऊत्रै न कीन्ही घात, भई है नदानी बंस छत्तिस में कबकी।

दच्छिन को नाथ ऐसी देखि धरे मूछों हाथ, सिवाजी न हो तो तो सुनति होती सबकी ॥'' (मिश्र ,2017)

इस तरह हम देखते हैं कि मध्यकाल बहुत उथल- पुथल का युग है, फिर भी तद्-युगीन समाज और परिस्थितियों का स्वतंत्र चित्रण कवियों ने जगह- जगह अपने काव्य में किया है। गोरेलाल, भूषण और मान का नाम इस क्षेत्र में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। गोरेलाल ने छत्रप्रकाश में समसामयिक हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष और हिन्दुओं पर किये जाने वाले मुगलों के अत्याचारों का बड़े स्पष्ट शब्दों में चित्रांकन किया है। यथा -

" हिन्दू तुरुक दीन हूँ गाये। तिन सों बैर सदा चलि आये ॥

लेख्यो सुर असुरन को जैसो। केहरि करनि बखान्यो तैस्यौ ॥

जब ते साह तखत पर बैठे। तब तें हिन्दुन सो उर ऐठे ॥

महंगे कर तीरथन लगाये। वेद देवाले निदरि ढहाये ॥

घर घर बाँधि जैजिया लोने। अपने मन माये सब कोने ॥'' (सिंह, 1973)

इस्लाम धर्म का समर्थक, सरक्षक, प्रचारक और हिन्दू धर्म का कट्टर विरोधी औरंगजेब उन दिनों मुगल सम्राट था। औरंगजेब ने मन्दिरों को ध्वंस करवाया और जजिया कर फिर से लगाया। उसने न केवल हिन्दुओं को मुसलमान बनने पर मजबूर किया। बल्कि इसके साथ ही अनेक मन्दिरों को भी नष्ट कर दिया था। लाखों हिन्दू जबरदस्ती मुसलमान बना लिये गये। भूषण के काव्य में भी इसका वर्णन मिलता है। भूषण लिखते हैं –

"देवल गिरावते फिरावते निसान अली, ऐसे समै राव-राने सबै गए सबकी।

गौरा गनपति आप, औरंग को देखि ताप, आपने मुकाम सब मारि गए दबकी ॥

पीरा पयगंबरा दिगंबरा दिखाई देत, सिद्ध की सिधाई गई रही बात रबकी।

कासीहू की कला गई मथुरा मसीत भई सिवाजी न होतो तो सुनति होती सबकी ॥'' (मिश्र,2017)

इसी प्रकार मान ने राजविलास में तात्कालिक अकाल का बड़ा ही हृदय विदारक चित्र खींचा है –

"बिकल भयै नर अन्न बिनु, भूखहिं अभख भखंत।

कंत तजत निज कामिनी, कामिनि तजत सु कंत ॥

मात पिता हूँ निठुर मन, बैंचत बालक बाल।

ररबरि रंक करंक परि, दिसि दिसि रौर दुकाल ॥

The Academia
(A Multidisciplinary Peer-Reviewed Research Journal)
Volume: 03, Issue: I, Pages: 50-53, Year: 2025
ISSN- 2583-8830

पसु पंखी पाए प्रलय, प्रजा प्रलय पावंत।

कोपिय काल कराल कलि, धीर न कोइ धरंत ॥'' (मनेरिया,सं.2015)

2. निष्कर्ष

इस तरह ब्रजभाषा जीवनीपरक साहित्य में युग-जीवन की सूक्ष्म झाँकियाँ देखी जा सकती हैं और यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ब्रजभाषा जीवनीपरक काव्य में तदयुगीन जीवन, सभ्यता और संस्कृति के बड़े सजीव और गतिशील चित्र विद्यमान हैं। ब्रजभाषा जीवनीपरक काव्य का इस प्रकार का अनुशीलन, मध्यकालीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण है। अतः कहना न होगा कि इन चरित काव्यों में राजाओं की प्रशस्तियां होते हुए भी मध्यकालीन राजदरबारी जीवन, युद्धकला और राजनीतिक क्रियाक्लापों के दर्शन अपने पूरे आभिजात्य संस्कृति के साथ मौजूद हैं। कवियों ने भले ही पेशेवर इतिहासकार की तरह तिथि और घटनाक्रम की क्रमबद्धता का ध्यान न रखा हो लेकिन अतीत को कलात्मक रूप में सुरक्षित रखकर एक महत्वपूर्ण कार्य किया है।

राजदरबार की संस्कृति में रचे जाने के कारण इन चरितकाव्यों का स्वरूप भी उसी तरह से निर्मित हुआ है। इसी वजह से इनमें आम जनता के जीवन का चित्र बड़ी मुश्किल से मिलता है। किन्तु इसके लिए ये कवि ही उत्तरदायी नहीं थे अपितु वे शासक भी उत्तरदायी थे जो इन कवियों के प्रेरणा स्रोत थे। राजदरबार में बैठकर आम जनता के लिए काव्य रचना आसान भी नही था, जहाँ केवल राजनीति के दांव-पेंच आजमाये जाते हो, शत्रुओं को को हराने के लिए दिन-रात युद्धों की रणनीतियाँ बनायी जाती हो। किंतु फिर भी ये कवि अपने कवि धर्म का पालन करते थे और अपने काव्य में देशकाल के वातावरण का भी चित्रण करते थे।

3. सन्दर्भ ग्रंथ-

- रामचन्द्र शुक्ल, - हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, 2005, पृष्ठ -01
- भगवान दास तिवारी - रीतिकालीन हिन्दी वीर काव्य, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, 1987 पृष्ठ-68
- विश्वनाथ प्रसाद मिश्र - भूषण ग्रंथावली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017,पृष्ठ -238
- राजमल बोरा- भूषण और उनका साहित्य,साहित्य रत्नालय,कानपुर,1987,पृष्ठ-07
- विश्वनाथ प्रसाद मिश्र - भूषण ग्रंथावली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017,पृष्ठ -150
- जदुनाथ सरकार- औरंगजेब,हिंदी ग्रन्थ रत्नाकर,बम्बई,1951,पृष्ठ-585
- विश्वनाथ प्रसाद मिश्र - भूषण ग्रंथावली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017,पृष्ठ -221
- महेन्द्र प्रताप सिंह - लाल कवि कृत छत्रप्रकाश, श्रीपटल प्रकाशन, नई दिल्ली 1973 ई. पृष्ठ-86
- विश्वनाथ प्रसाद मिश्र - भूषण ग्रंथावली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017,पृष्ठ -216
- सं. मोती लाल मनेरिया - मान कृत राजविलास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी,संवत्-2015,पृष्ठ-93

Corresponding Author:
राजीव यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर,
कालीचरण पी0 जी0 कॉलेज, लखनऊ

Email: rajeev1.jnu@gmail.com